4

संयोजन के रचनात्मक रूप

किसी भी चित्र में, विषय के अनुसार चित्र संयोजन का एक विशेष महत्व होता है। विभिन्न आकारों, रंगों, रेखाओं और कलाकार की कल्पना के एकत्र होने से जो चित्र रचना होती है, उसे चित्र संयोजन कहते हैं। चित्र के संयोजन में मानव आकृति, वस्तु चित्रण, ज्यामितीय आकार और प्रकृति चित्रण आदि का समावेश किया जा सकता है।

प्रकृति जैसी दिखाई देती है, कलाकार उसे अपनी कला में वैसा नहीं दर्शाता, वह प्रकृति का वही रूप चित्रित करता है जैसा वह देखता है और महसूस करता है। चित्रकार कोई फोटोग्राफर नहीं है, जो प्रकृति का यथावत रूपांकन करे। चित्रकार दृश्य को देखकर अपने मन में आये भावों को कागज पर चित्र रूप में उभारता है। कलाकार दृश्य में स्वयं को महसूस कर प्राय: उससे एकात्म होकर उसे देखता और सिरजता है। वह अपने कल्पना संसार को अपनी तूलिका के माध्यम से चित्र रूप में बनाता है।

चित्र दो प्रकार के होते हैं - 1. सत्य अनुकृति 2. काल्पनिक

सत्य अनुकृति चित्र ऐसे होते हैं, जिनको किसी दृश्य या वस्तु को प्रत्यक्ष देखकर उनका चित्र बना दिया जाता है। **काल्पनिक चित्र** के लिए लक्षण (गुण/विशेषता) और प्रमाण (उचित बोध, परिमाण, संरचना) का ज्ञान चाहिए, जैसे भिखारी, राजा, दुल्हन, भगवान, किसान आदि के भिन्न-भिन्न प्रमाण और लक्षणों को मस्तिष्क में विचार करने के बाद कलाकार चित्र बनाता है। उन्हीं लक्षणों के आधार पर दर्शक चित्र में राजा और भिखारी के बीच अन्तर जान पाता है। उपर्युक्त दोनों ही प्रकार के चित्र बनाने में भारतीय कला के छह अंगों का विशेष महत्व है, जो निम्नलिखित हैं :

1. रूपभेद अथवा दृष्टि का ज्ञान
2. प्रमाण अथवा ठीक अनुपात, नाप तथा बनावट
3. भाव अथवा आकृतियों में मन का भाव
4. लावण्ययोजना अथवा कलात्मकता तथा सौन्दर्य का समावेश

5. सादृश्य अथवा देखे हुए रूप के समान आकृति
6. वर्णिकाभंग अथवा रंगों तथा तूलिका के प्रयोग में कलात्मकता

विषय के अनुकूल उसका रूप प्रदर्शित करना कलाकार की सफलता की कसौटी होती है, जैसे देवता, नाग, यक्ष एवं अन्य महान विभूतियों के चित्र सौम्य, शान्त, करुणा की भावना को उत्पन्न करने वाला हो और राक्षस में भीषणता प्रकट करने वाला। विरह से त्रस्त महिला का शरीर दुर्बल, इधर-उधर बिखरा, और वस्त्र एवं शृंगार अव्यवस्थित से हों। कारीगर और मजदूर के हाथ में अपने-अपने औजार हों। इसी प्रकार चित्रण करते समय सामाजिक तथा भौगोलिक पृष्ठभूमि दर्शाया जाता है तथा वातावरण को भी प्रकट किया जाता है। जैसे दिन, प्रातः, संध्या, रात्री और चांदनी आदि का प्रभाव चित्रों को अनुकूल बनाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- चित्र संयोजन के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- दृश्य चित्र, समुद्र चित्रण और ज्यामितीय सजावट प्रस्तुत कर सकेंगे;
- चित्र संयोजन की मुख्य बातों की पहचान कर सकेंगे;
- दृश्यदर्शी (व्यू फाइंडर) को तैयार करना, उसके महत्व तथा प्रयोग को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- भारतीय कला के छह अंगों के बारे में उल्लेख कर सकेंगे।

4.1 महत्वपूर्ण तत्व

(क) विषय
(ख) आकार/प्रारूप
(ग) मुख्य केंद्र बिन्दु
(घ) चित्र संयोजन में प्रयोग होने वाली आकृतियाँ
(ङ) आकृतियों का स्थापन
(च) संतुलन

चित्र संयोजन के विभिन्न चरण

1. बनाए जाने वाले दृश्य या विषय-वस्तु की पूर्व कल्पना करना अर्थात् चित्र बनाने से पूर्व मन में ही चित्र को तैयार कर लेना।
2. चित्र फलक एवं माध्यम का चुनाव करना अर्थात् चित्र को किस प्रकार की सतह बोर्ड, कैनवास, कागज आदि पर बनाया जाये और किन रंगों में चित्र अधिक प्रभावशाली लगेगा इसका चयन करना। जैसे- जल रंग, तैल रंग या सूखे रंग आदि।

3. बनाए जाने वाले चित्र के विषय पर विचार करना एवं प्रारूप तैयार करना।
4. स्केच – चित्र बनाने से पूर्व एक रफ स्केच तैयार करना।
5. स्पष्ट रेखांकन – जब स्केच मन को जँचने लगे तब उस स्केच का स्पष्ट रेखांकन करना।

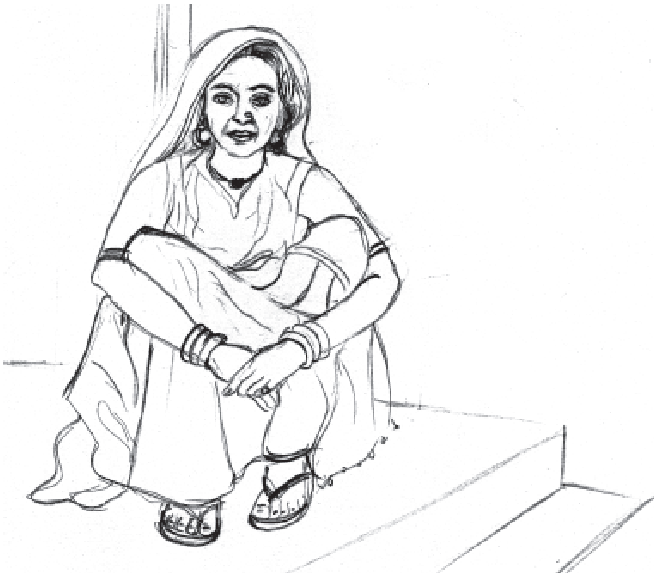

चित्र 4.1

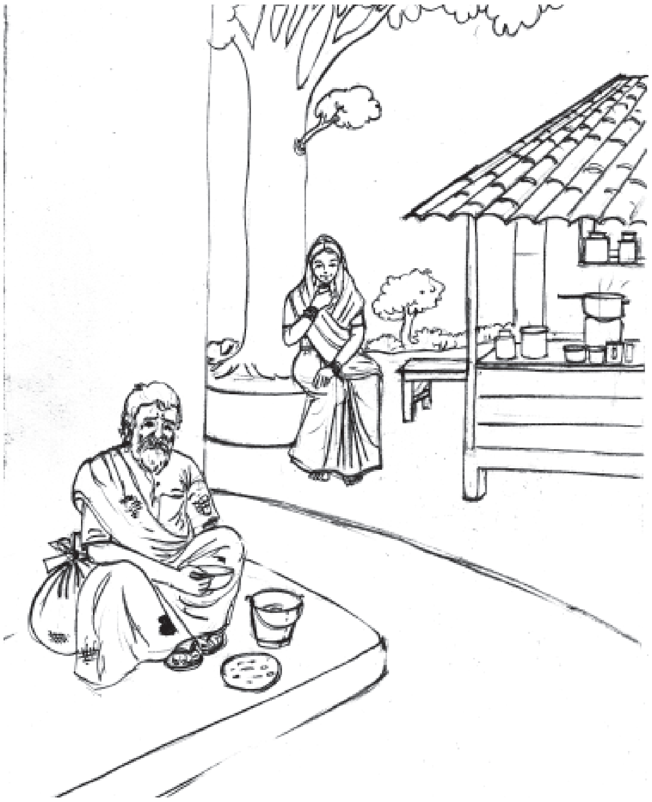

चित्र 4.2

6. रंगांकन- रंग करने से पूर्व मन में विचार कर लें कि चित्र में कौन-कौन से रंगों का प्रयोग करना है।
7. रेखांकन- रंग भरने के उपरान्त बाह्य रेखा का अंकन करना।
8. फिनीशिंग- आउटलाइन करने के बाद चित्र को अंतिम रूप देना।

हल्की लाइन से चित्र बनाने के बाद चित्रकार चित्र की जाँच करे, जिससे कि वह आगे बढ़ने से पहले चित्र की त्रुटियों को दूर कर सके। इससे शिक्षार्थियों को पेपर पर रबर का प्रयोग कम करना पड़ेगा और कागज पर किसी प्रकार का रूँआ, धब्बा नहीं आएगा यानी कागज खराब नहीं होगा।

4.2 पूरा चित्र

चित्र को कब पूरा माना जाए?

एक चित्र को तब पूरा माना जाता है, जब उसमें आस-पास के क्षेत्र से भी कुछ संबंधित सहायक वस्तुओं को बनाया गया हो, जैसे अध्ययन करते हुए बच्चे के चित्र में साधारण चित्रकार पढ़ता हुआ छात्र बनाकर चित्र को पूरा समझ लेता है परन्तु एक अनुभवी चित्रकार, चित्र के आस-पास माहौल बनाता है जैसे पढ़ते हुए बच्चे के पास मेज, कुर्सी, किताबों की अलमारी, आदि को भी चित्रित करता है।

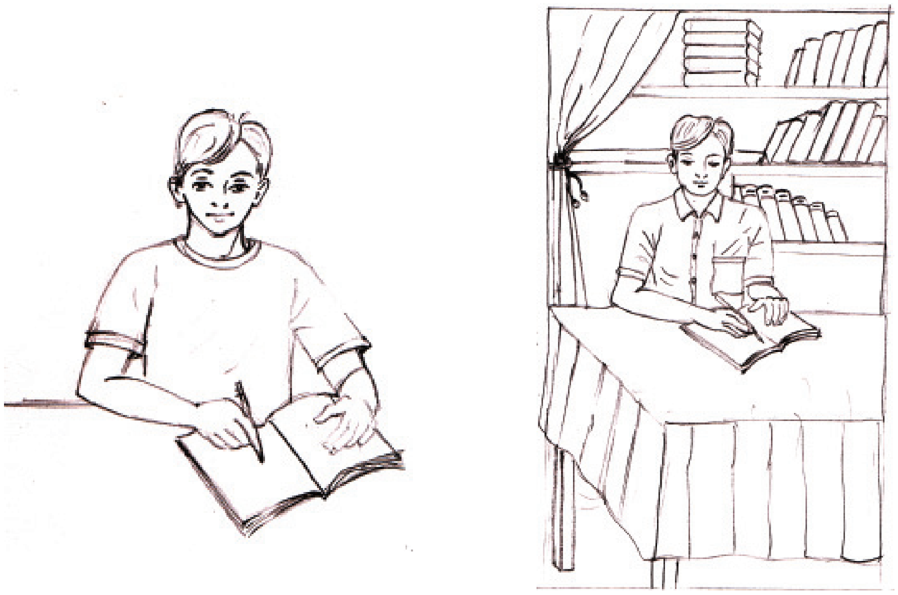

अधूरा चित्र

पूर्ण चित्र

चित्र 4.3

अभ्यास 1

शिक्षार्थियों, आप तत्काल स्केचिंग करके अपने लिए चित्र संयोजन कर सकते हैं। जैसे घर में कार्य करती हुई महिला, पालतू पशु को चारा खिलाता हुआ ग्वाला, रेलवे स्टेशन पर चाय की

दुकान, सब्जी वाला, पार्क में खेलते बच्चे आदि जहाँ भी इस प्रकार के दृश्य दिखाई दे, आपको स्केच आरंभ कर देनी चाहिए।

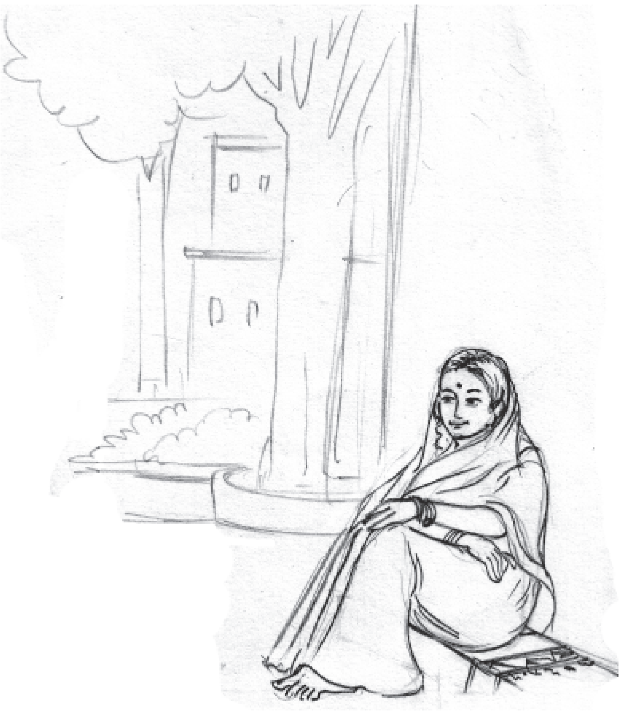

चित्र 4.4: सोचती हुई महिला

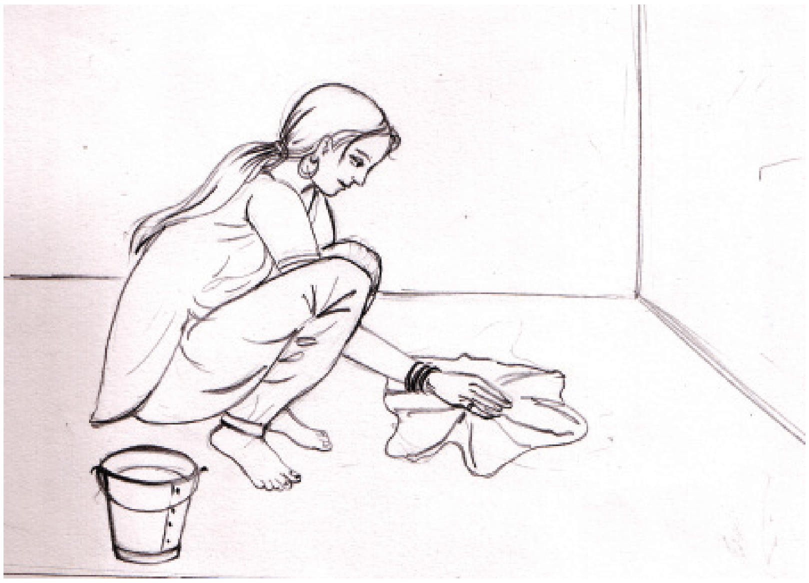

चित्र 4.5: पोछा लगाती महिला

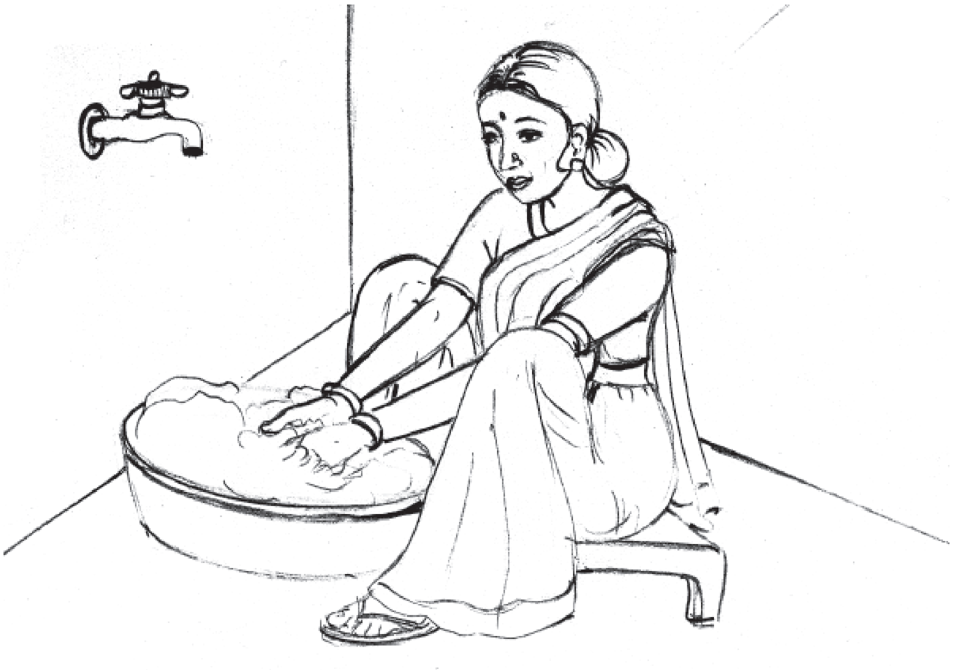

चित्र 4.6: कपड़े धोती महिला

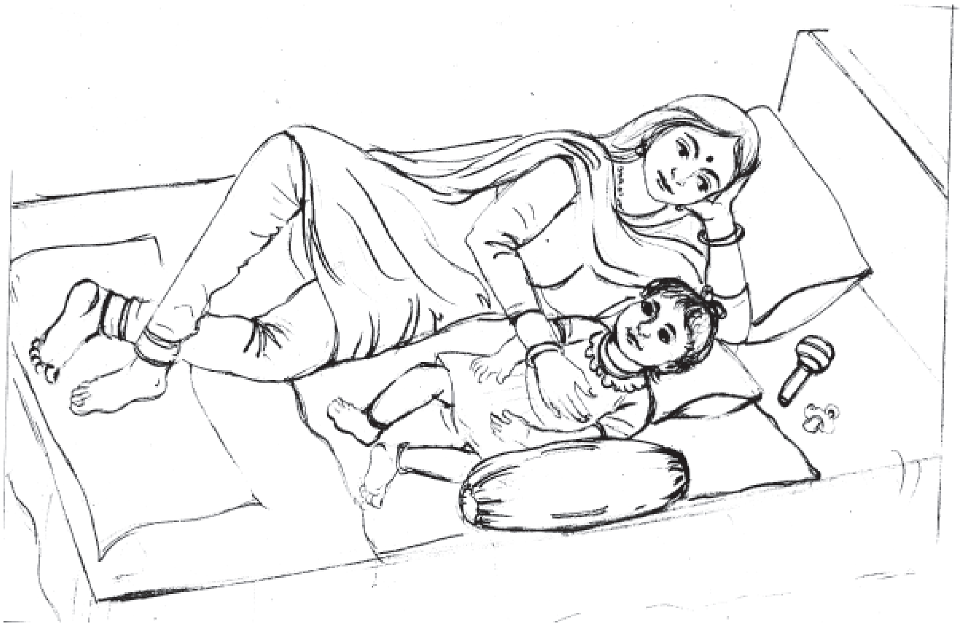

चित्र 4.7: आराम करती महिला एवं शिशु

ये सभी चित्र हल्के पेन्सिल लाइन में बनाए गए हैं इन चित्रों को चित्र स्थल पर जाकर बनाया गया है। शिक्षार्थियों आपको भी इसी प्रकार प्रतिदिन चित्र स्थल पर जाकर चित्र बनाने का अभ्यास करना चाहिए।

अभ्यास 2

प्रकृति चित्रण बनाइए

कोई भी प्राकृतिक दृश्य जैसे गांव, रेलवे-स्टेशन, पहाड़ों का दृश्य, नदी का किनारा आदि के दृश्य को हम प्राकृतिक चित्रण के रूप में प्रयोग कर सकते हैं।

प्रथम चरण

झोपड़ी, पेड़, पहाड, नाव, सड़क, रेलगाड़ी इत्यादि।

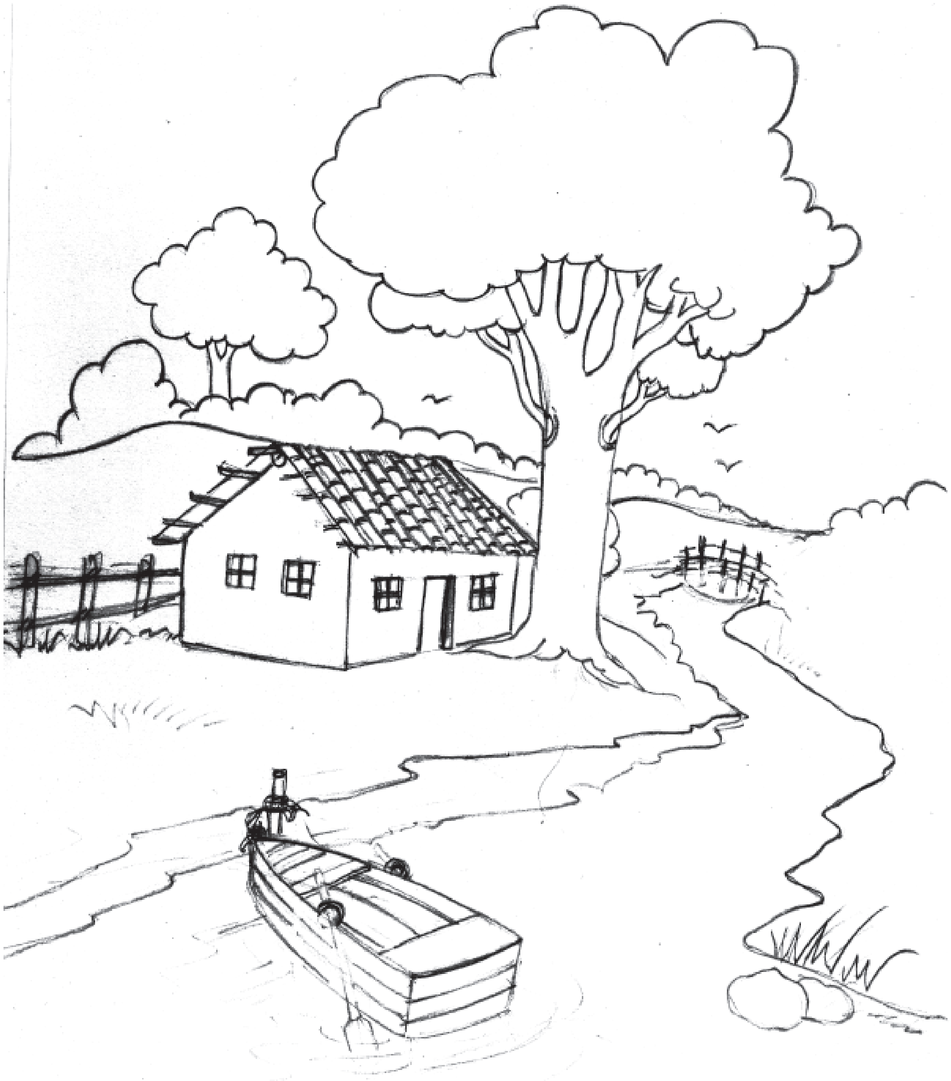

चित्र 4.8: पेंसिल से बना चित्र

ऊपर की सभी चीजों से मिलकर बने प्राकृतिक चित्र का उदाहरण दिया गया है।

द्वितीय चरण

इस चरण में, चित्र को जल रंग या किसी अन्य रंग से रंगा जाता है। रंग की शुरुआत हल्की टोन से होती है।

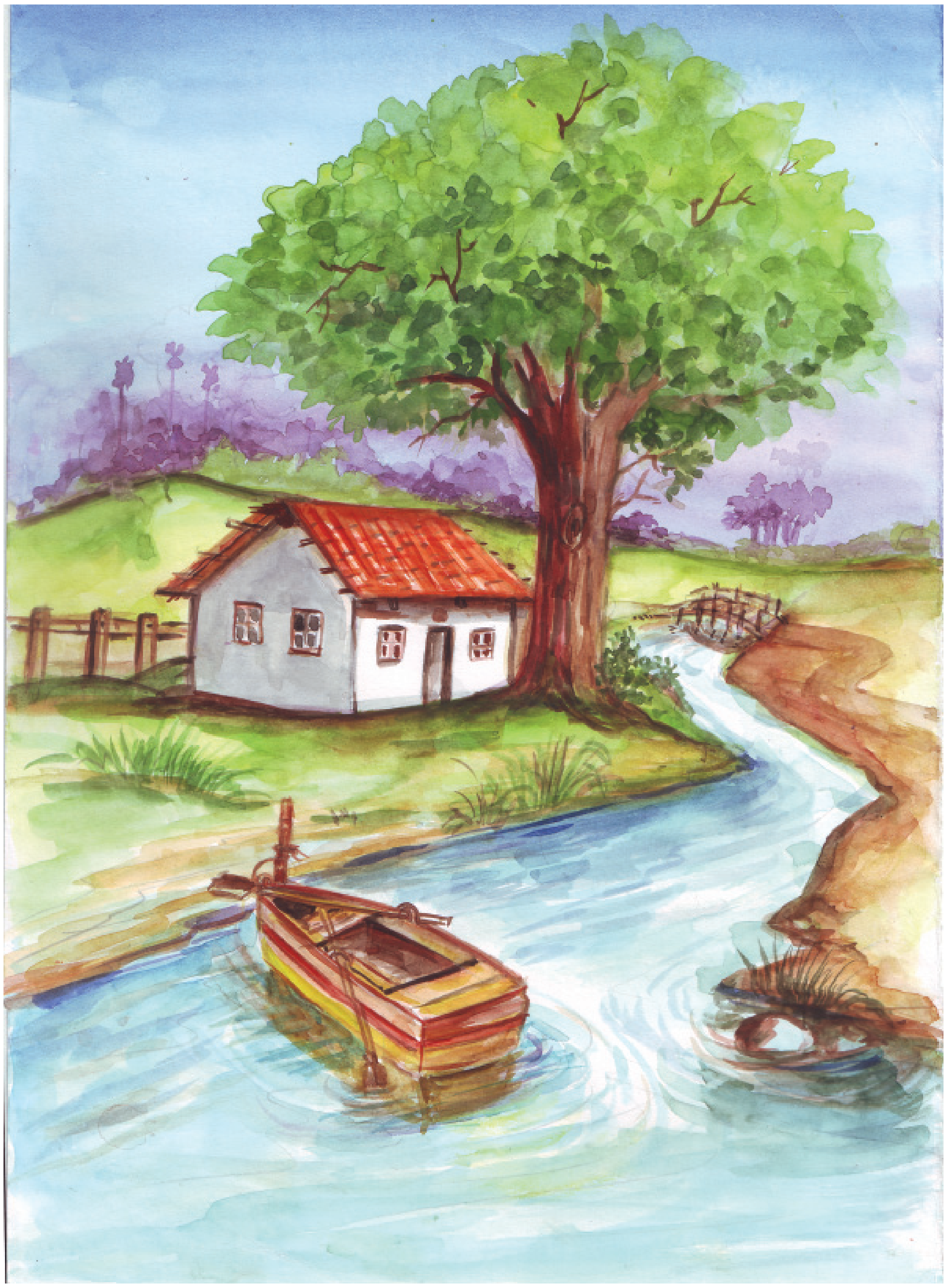

चित्र 4.8(क)

तृतीय चरण

इस अंतिम चरण में रंगों के टोन को तीनों आयामी गुणों को उजागर करना चाहिए। अंत में काले रंग के साथ रूपरेखा से चित्र को पूरा करें।

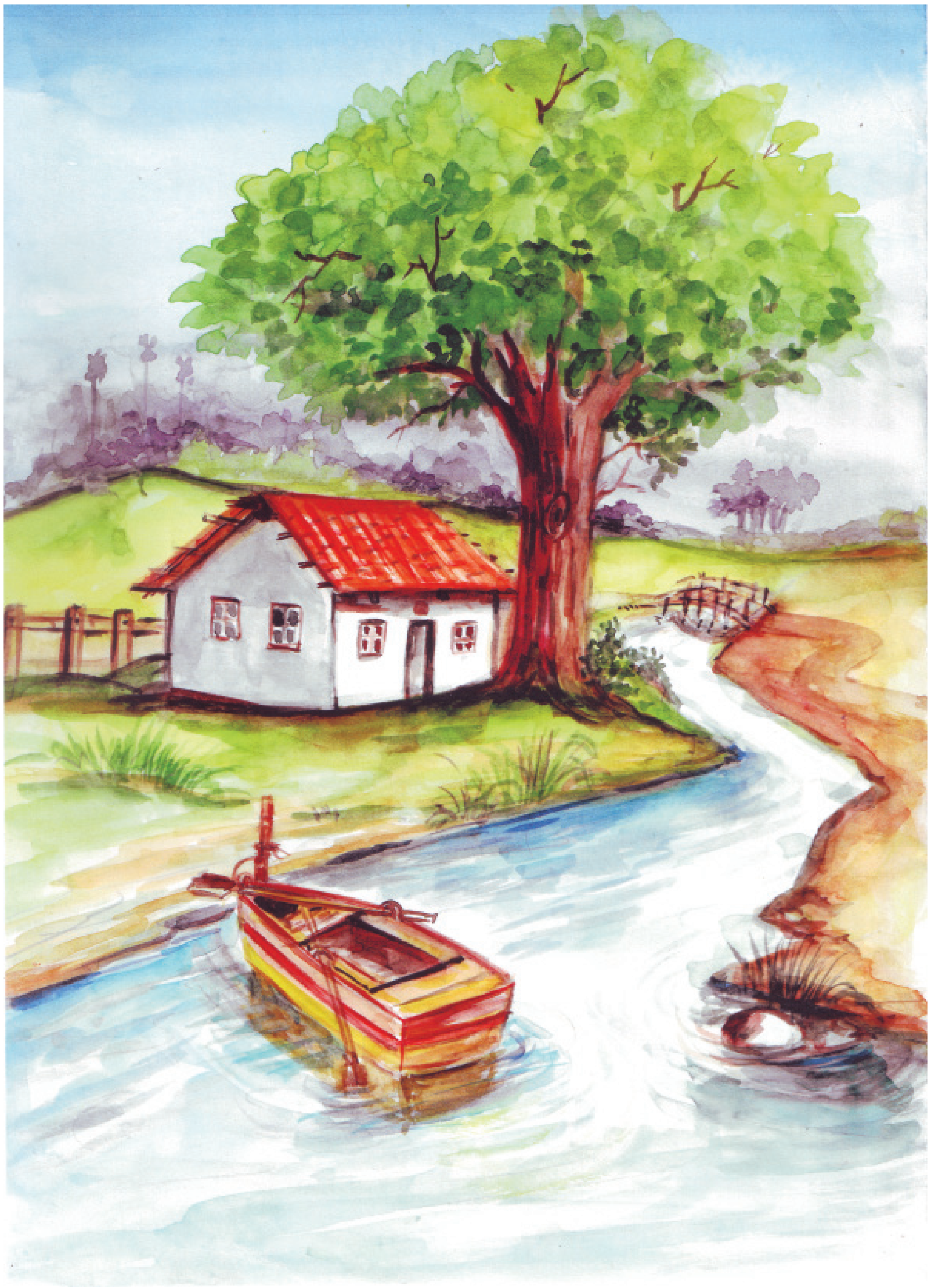

चित्र 4.8(ख)

अभ्यास 3

एक गाँव का दृश्य बनाएँ

गाँव के विभिन्न प्रकार के दृश्य हैं। उनमें से एक को चुनें और अपने कागज में बनाइए और हल्के रंग से शुरू करें। चित्र बनाने में आगे याद रखें कि एक या दो मानव आकृतियाँ और पशु आकृतियाँ होनी चाहिए। हमेशा हल्के दबाव के साथ रेखा की शुरुआत करें, इसलिए 2B पेंसिल का इस्तेमाल करें। एक उदाहरण नीचे दिया गया है :

प्रथम चरण

कागज पर HB पेंसिल से चित्र बनाना शुरू करें। चित्र बनाते समय चित्रण की कोमलता का ध्यान रखें। फिर रेखा चित्र को पूरा करने के लिए किसी भी कठोर पेंसिल का उपयोग करें।

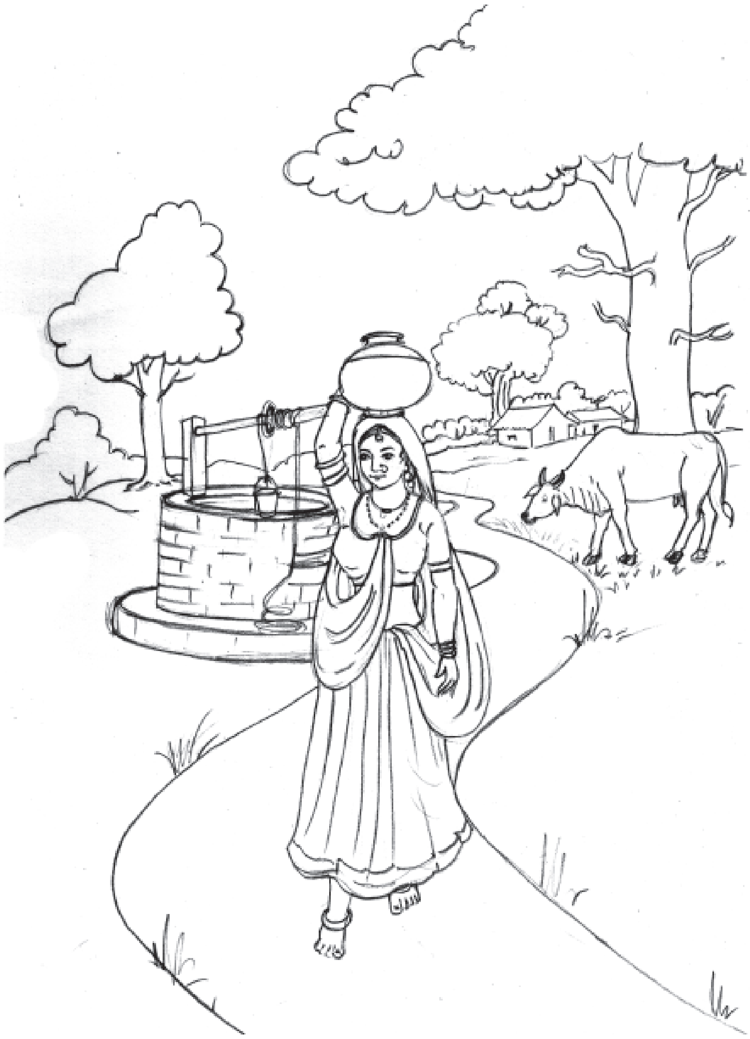

चित्र 4.9

द्वितीय चरण

रचना में हल्के रंगों का प्रयोग करें। रंग लगाते समय इस बात का ध्यान रखें कि रंग आपस में न मिलें।

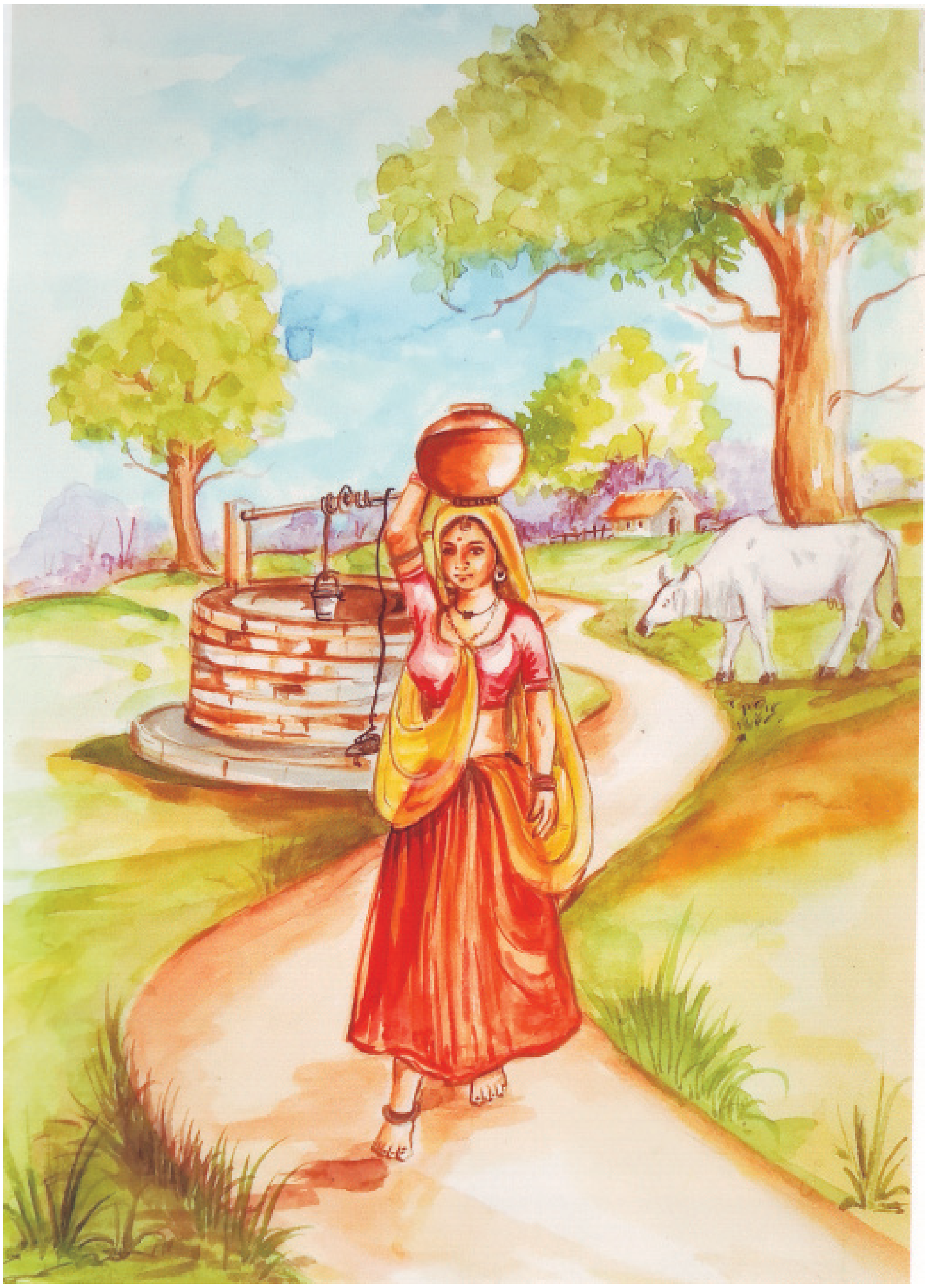

चित्र 4.9(क)

तृतीय चरण

इस अंतिम चरण में, चित्र में गहराई अनुभव के लिए रंगों में गहरे रंग क प्रयोग करें। काले रंग के रूपरेखा के साथ काम पूरा करें।

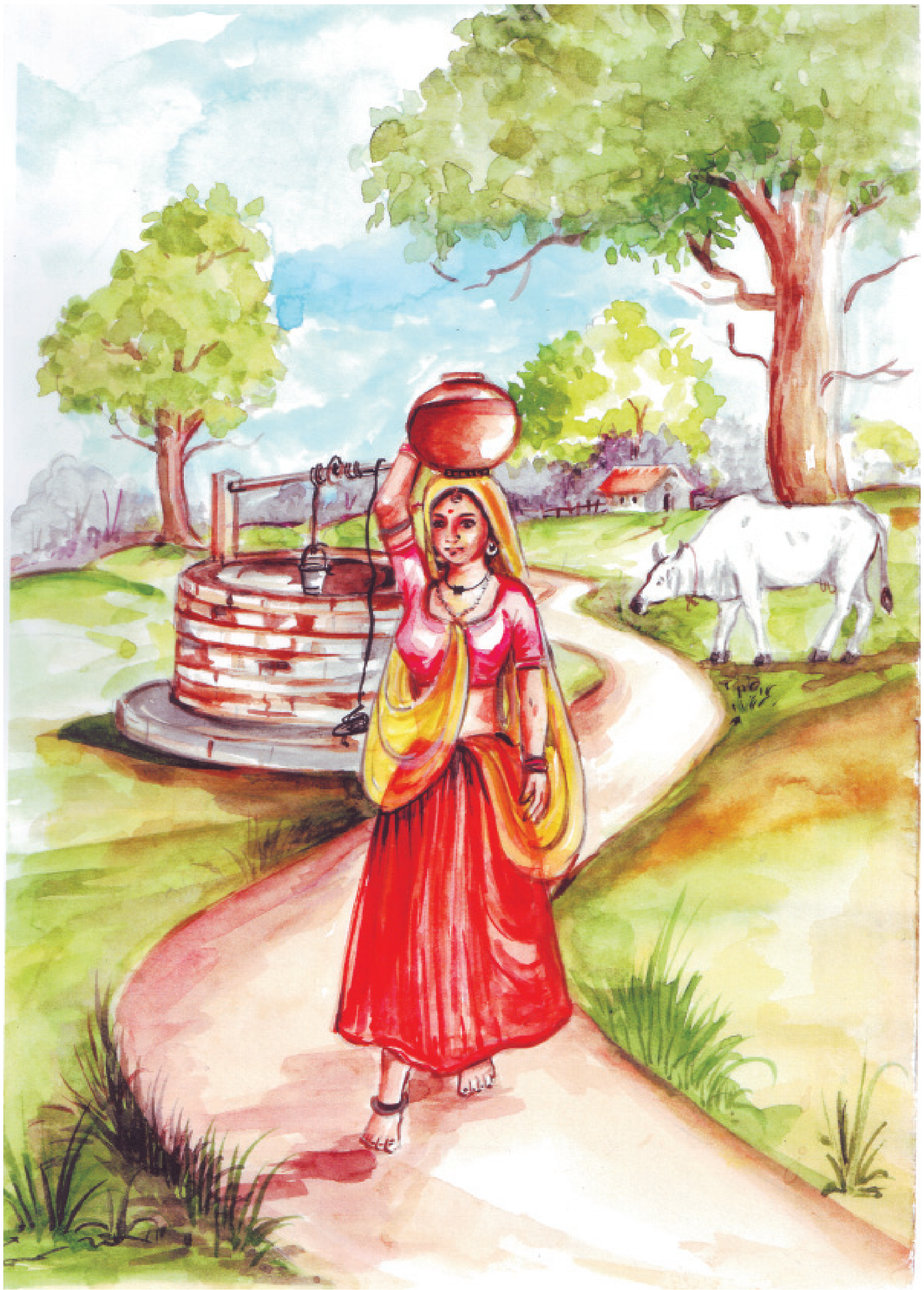

चित्र 4.9(ख)

4.3 प्रकृति-चित्रण का चुनाव कैसे करें?

प्रकृति चित्रण करते समय उचित दृश्य का चुनाव करना होता है। सब कुछ जो दिखाई देता है, उस सबको एक सुन्दर पेन्टिग की तरह नहीं बनाया जा सकता। क्योंकि पेपर पर चित्र बनाने की अपनी एक सीमा होती है। जिस प्रकार कैमरे से फोटो खींचते समय एक दृश्य का निर्धारण किया जाता है, उसी तरह प्रकृति-चित्रण करने से पूर्व दृश्य का निर्धारण किया जाता है।

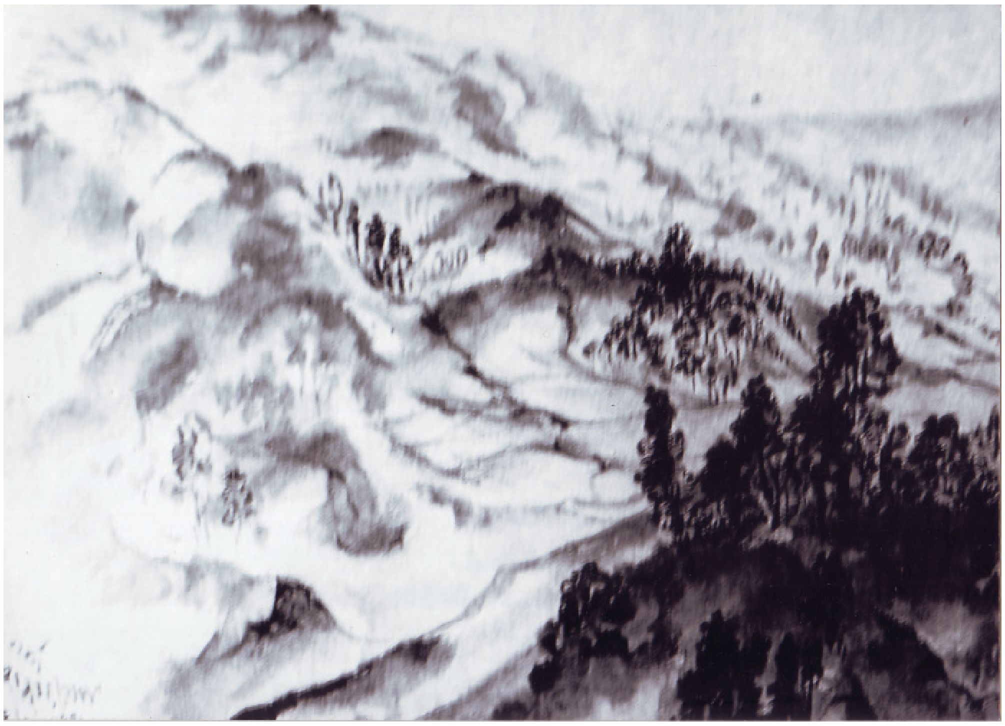

चित्र 4.10

ऊपरी बनी वस्तुओं द्वारा प्राकृतिक चित्र संयोजन

शीर्षक	प्रकृति चित्रण, गांव का दृश्य
आकार	9.5 × 6.2
चित्रकार	नन्दलाल बोस
माध्यम	जल रंग, कागज

4.4 खोजक/दृश्यदर्शी

हम उस दृश्य के एक हिस्से का चयन करने के लिए एक दृश्यदर्शी का उपयोग करेंगे जिसे हम चित्रित करना चाहते हैं। काले पेस्टल कागज की 6×6 इंच की कागज लें। इसके बीच में 2 ×2 इंच का वर्ग काट लें। बीच में छेद वाली यह शीट आपका खोजक है इसे एक आँख से पकड़ें, दूसरी आँख बंद करें और अपना वांछित दृश्य देखें।

यहाँ खोजक के जरिए एक तस्वीर देखी जा रही है।

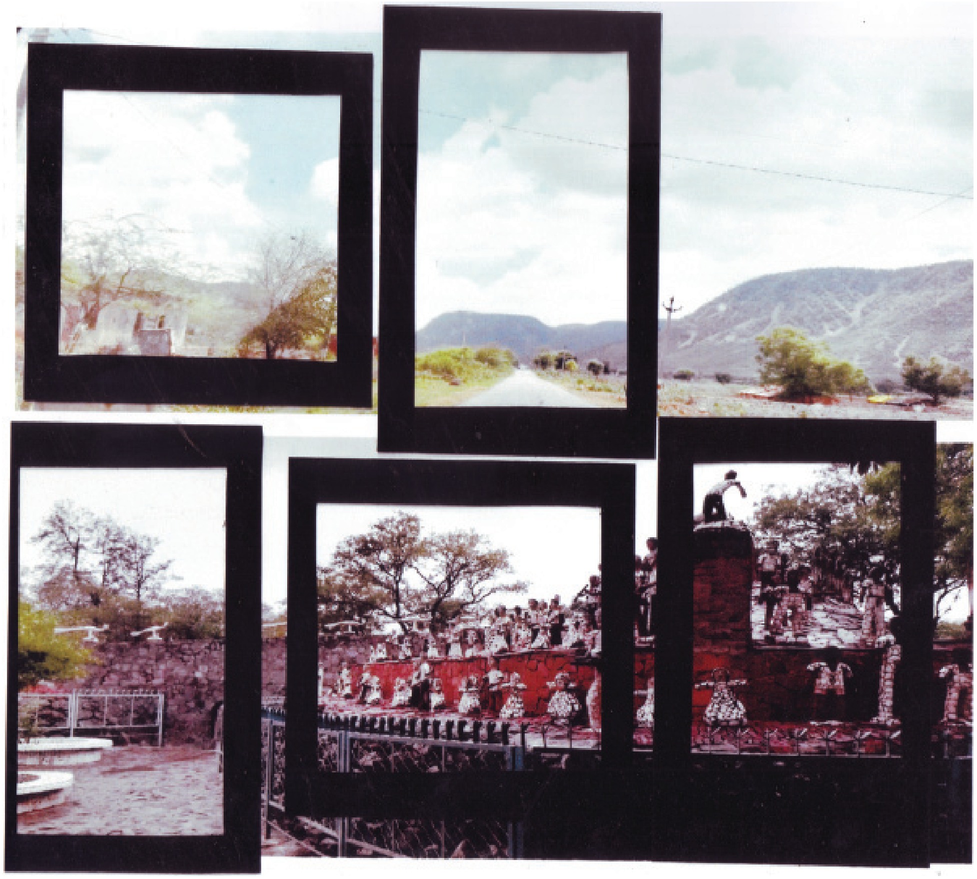

चित्र 4.11

4.5 ज्यामितीय अलंकरण

ज्यामितीय अलंकरण विभिन्न आकृतियों और आकार का उपयोग करता है– त्रिकोणीय, वर्गाकार, आयातकार, वृत्ताकार, अण्डकार आदि।

रंगीन कागजों के माध्यम से ज्यामितीय अलंकरण

किसी भी रंग के चिकने कागज की एक ज्यामितीय डिजाइन शीट लीजिए। इसमें से विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों को काटें। इन आकृतियों की एक श्वेत पत्र पर रखें और एक रचना बनाएँ।

जब आप वांछित रचना प्राप्त कर लेते हैं; तो आप अलंकरण तैयार करने के लिए टुकड़ों को एक साथ चिपका सकते हैं। इसी तरह आप कागज पर विभिन्न आकृतियाँ बना सकते है और उनमें रंग भरकर सुंदर चित्रण कर सकते हैं। वस्त्रों, साड़ियों, शॉल, चादरों, दीवार पैनलों आदि पर अलंकरण का उपयोग किया जा सकता है।

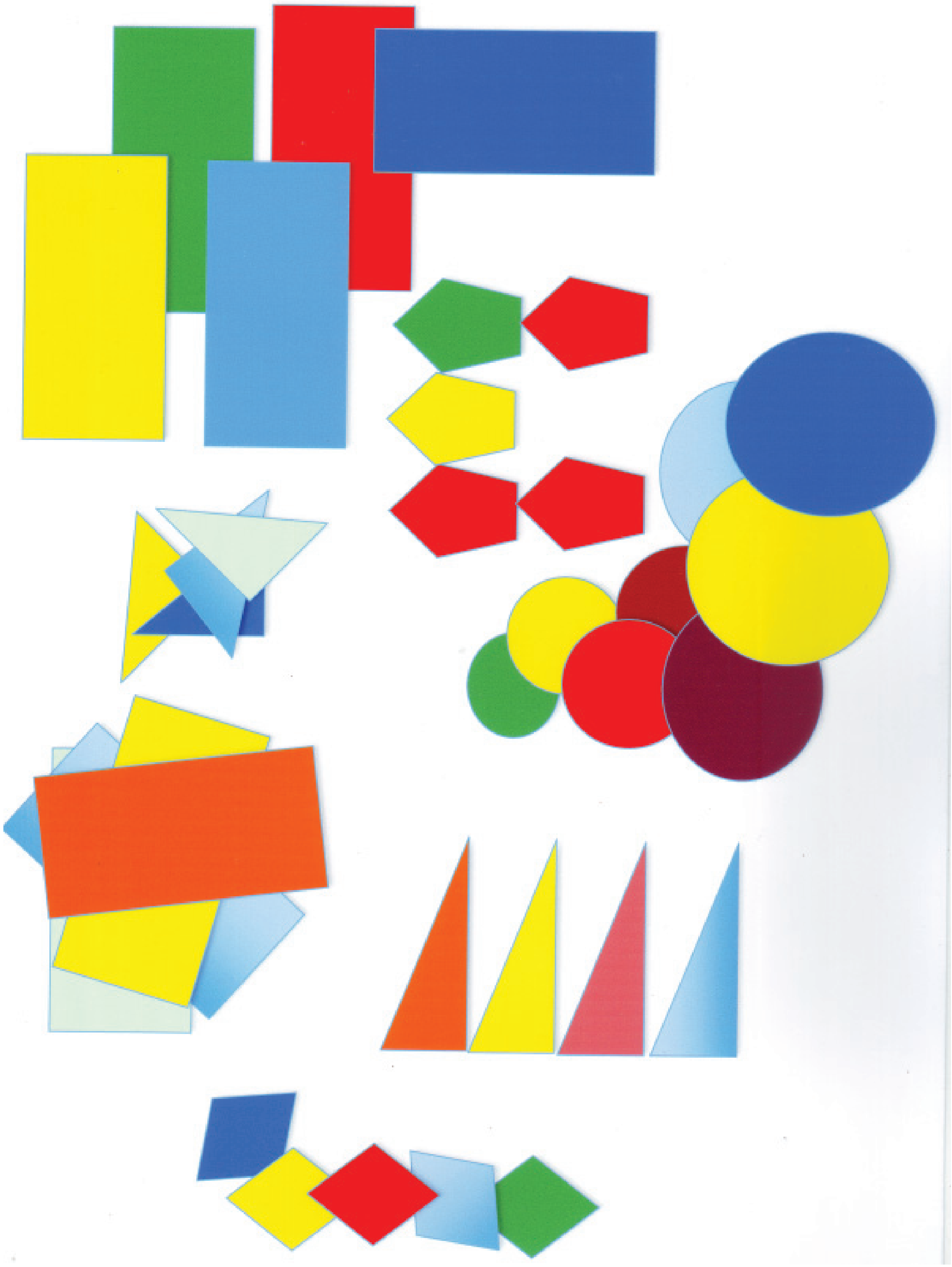

चित्र 4.12

आपने क्या सीखा

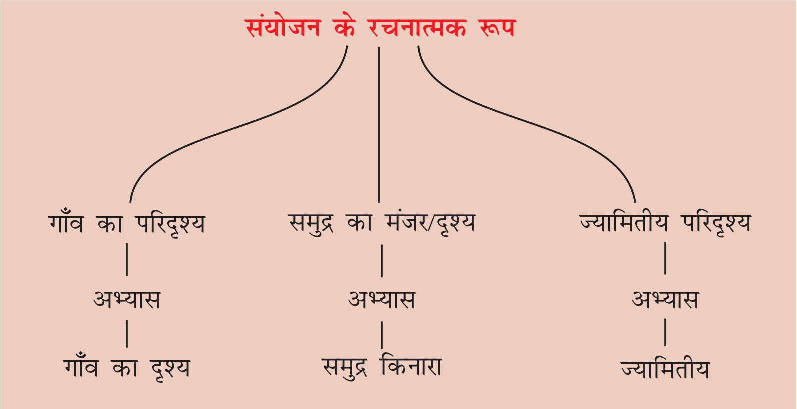
संयोजन के रचनात्मक रूप
गाँव का परिदृश्य
समुद्र का मंजर/दृश्य
ज्यामितीय परिदृश्य
अभ्यास
अभ्यास
अभ्यास
गाँव का दृश्य
समुद्र किनारा
ज्यामितीय

पाठांत प्रश्न

1. अपने आस-पास के दृश्य को देखकर 4 × 6 के आकार में दो चित्र बनाएं।
2. साड़ी के बार्डर में ज्यामितीय डिजाइन बनाएँ।
3. प्रकृति-चित्रण में बरगद का पेड़, झोपड़ी और झरना अंकन करें।
4. छह इंच के गोलाकार सफेद चार्ट पेपर पर रंगीन ग्लॉसी पेपर द्वारा ज्यामितीय डिजाइन तैयार करें।
5. कैमरा-व्यू का प्रयोग करते हुए एक प्राकृतिक दृश्य ए-4 माप के पेपर पर बनाएँ।

शब्दकोश

सिरजना	रचना करना
व्यवस्थित	संतुलित करना
अनिवार्य	जरूरी/आवश्यक
आकर्षित	मन को भाना
व्यू-फाइन्डर	दृश्य का चुनाव करने हेतु सहायक उपकरण